डॉ. गजानन शंकर सुर्वे.
एम.ए.; पीएच्.डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा - 415 002 **(महाराष्ट्र)**

स्नातकोत्तर अध्यापक, हिन्दी
शोध निर्देशक, हिन्दी सदस्य,
अभ्यास मण्डल, हिन्दी
शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर.

191-बी, गुरूवार पेठ,
दोशी बिल्डिंग,
सातारा - 415 002 **(महाराष्ट्र)**

प्र मा ण प त्र

मैं, डॉ. गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा - यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. रशीद महीबूब देसाई ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल् (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध - **" विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी - पात्र "** मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्री. देसाई के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सातारा
दिनांक: 30 नवम्बर 1991.

(डॉ. गजानन शंकर सुर्वे)
शोध निर्देशक के हस्ताक्षर.

प्र ख्या प न

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी - पात्र

यह शोध - प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल्. (हिन्दी) के प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई हैं।

सातारा

दिनांक : 30 नवम्बर 1991.

(श्री. रशीद महीबूब देसाई)

शोध छात्र के हस्ताक्षर

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के
नारी-पात्र

प्रा क्क थ न

श्री विष्णु प्रभाकर हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार हैं। क्या कहानी क्या उपन्यास, क्या एकांकी क्या नाटक, क्या जीवनी, क्या संस्मरण; साहित्य की सभी प्रगुख विधाओं का सृजन करके उन्होंने हिन्दी-साहित्य की श्रीवृध्दि की हैं। आधुनिक हिन्दी नाटककारों में वे विशेष ख्याति-प्राप्त हैं। वे मुख्यतथा मानवतावादी एवं राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना के दीपस्तंभ हैं। उनके साहित्य में, विशेषतः नाटकों में आदर्शवाद और यथार्थवाद का सुन्दर संगम दिखाई पडता हैं। इतना ही नहीं, मनोविज्ञान की दृष्टी से भी उनके नाटक महत्वपूर्ग हैं। उनके नाटकों के नारी-पात्र बहुआयामी व्यक्तित्व के परिचायक हैं।

प्रबंध का विषय - **' विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी पात्र '** है। अभी तक लघु-शोध-प्रबंध की दिशा में विष्णु प्रभाकर के सभी प्रकाशित मौलिक नाटक परिलक्षित करके उनके नारी-पात्रोंके बारे में शोध-कार्य नहीं हुआ है; यद्यपि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में कुछ शोध-कार्य जरूर सम्पन्न हुआ है। अतः उनके नाटकों के नारी पात्रों का अनुशीलन हमारा प्रमुख उद्देदष्ट रहा है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध **सात** अध्यायों में विभाजित है।

अध्याय । : प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक **' नाटक और नारी पात्र '** है, जिसके अंतर्गत साहित्य में नाटक का स्थान, पात्रः शब्दप्रयोग, साहित्य में पात्र का महत्व, नाटक में पात्र और चरित्र-सृष्टी,

पात्र और मनोविज्ञान, पात्र और द्वंद्व, पात्रः भाषा और संवाद, पात्रः रंगमंचीय आयाम, नायक-नायिका विचार-भारतीय एवं पाश्चात्य विचारधारा, पात्रों के वर्गीकरण का आधार और उनका वर्गीकरण, आधुनिक हिन्दी नाटकों में नारी-पात्र तथा विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र आदि को ध्यान में रखकर शोध-प्रबंध के विषय की जानकारी पृष्ठभूमि के रूप में दी गई है।

अध्याय 2 : प्रस्तुत अध्याय **' विष्णु प्रभाकर : जीवनवृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व '** नाम से अभिहित है, जिसमें विष्णु प्रभाकर के जन्म, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह, प्रभाकर नाम का इतिहास, उनकी साहित्यिक प्रेरणा, ग्रंथ-संपदा आदि का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। उनके मौलिक नाटकों का वर्गीकरण करके सामान्य परिचय दिया गया है; साथ ही उनके मान-सम्मान का भी उल्लेख किया गया है।

अध्याय 3 : प्रस्तुत अध्याय को **' विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी पात्रः आदर्शवादी के परिप्रेक्ष्य में '** संज्ञा दी गई है। इस अध्याय में साहित्य में आदर्शवाद, विष्णु प्रभाकर का नारी विषयक आदर्शवादी दृष्टीकोन एवं उनके नाटकों के आदर्शवादी नारी-पात्र, उनका वर्गीकरण करके उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय 4 : प्रस्तुत अध्याय का नामकरण **' विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी पात्र : यथार्थवाद के परिप्रेक्ष्य में '** रखा गया है, जिसके अंतर्गत साहित्य में यथार्थवाद, विष्णु प्रभाकर का नारी विषयक यथार्थवादी दृष्टीकोन और उनके नाटकों के यथार्थवादी नारी-पात्र, उनका वर्गीकरण करके उनके वैशिष्टय पर भी सोचा गया है।

अध्याय 5 : प्रस्तुत अध्याय का नामकरण **' विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी पात्र : मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में'** है। इस अध्याय में उनके नाटकों के मनोवैज्ञानिक नारी पात्रों का 'प्रधान नारी पात्र और गौण नारी पात्र' वर्गीकरण करके मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि में पात्रों की विभिन्न मनोदशाओं को विवेचित किया गया है।

अध्याय 6 : प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक **' विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी पात्र : रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य में '** है। इस अध्याय के अंतर्गत मंचसज्जा, पात्रों का क्रिया-व्यापार-अभिनेयता, संवाद और भाषाशैली, ध्वनि-प्रकाश-योजना आदि को परलक्षित करे नारी-पात्रों पर प्रकाश डाला गया है;

अध्याय 7: प्रस्तुत अध्याय **'समापन'** में लघु-शोध-प्रबंध का सार निरूपित किया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का अध्ययन श्रध्देय गुरूवर डॉ. गजानन शंकर सुर्वे रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के निर्देशनर में किया गया है। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद उन्होंने हर समय बडी तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। साथ ही डॉ. सुर्वेजी के निजी ग्रंथालय से भी मैं पूरी तरह से लाभान्वित हुआ हूँ। अतः मैं उनका हृदय से ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में मुझे आदरणीय प्राचार्य आर.एम्.चिटणीस, प्राचार्य अमरसिंह पां. राणे, गुरूवर डॉ. टी.आर.पाटील, प्रा. जयवंत र. जाधव, प्रा. सुश्री रूकसाना शेख, प्रा. वाय.के. मुलाणी, ग्रंथपाल श्री. एस्.डी.पाटील, प्रा.एस्.एल्. आरडे, प्रा. जे.एन्.शिंदे, ग्रंथालय-सहायक श्री. गायकवाड और श्री. मोहिते आदि, तथा आदरणीया सौ. देवलता सुर्वे भाभी और कु. कामायनी सुर्वे आदि की सहायता प्राप्त हुई। मैं उन सब का आभारी हूँ। मेरे आदरणीय पिताजी महीबूब धोंडीबा देसाई, की कृपा से ही यह शोध-कार्य सम्पन्न हो सहा। इस शोध कार्य में हमारे परिवार के मेरी स्नेहशील माँ आदरणीय बडे भाई हारूण देसाई, भाभी श्रीमती शहीदा देसाई, प्रेरक शक्ती धर्मपत्नी श्रीमती रिहाना और अन्य सदस्य आदि का मैं कृतज्ञ हूँ।

श्रध्देय विष्णु प्रभाकर जी, प्रबंध में समाविष्ट सभी अन्य ग्रंथमर्ताओं के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। शोध-प्रबंधके इलेक्ट्रानिक्स टंकन-लेखन का कार्य श्री. और श्रीमती शोभना खिरे ने सुचारू रूप से और तत्परता से किया है, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

सातारा

दिनांक - 30-11-1991.

रशीद महीबूब देसाई.

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र

-: अ नु क्र म णि का :-

अध्याय : 1 — नाटक और नारी-पात्र

भूमिका

साहित्य में नाटक का स्थान

पात्र : शब्द-पयोग, साहित्य में पात्र का महत्व,
नाटक में पात्र और चरित्र-सृष्टि,
पात्र और मनोविज्ञान, पात्र और द्वंद्व,
पात्र : भाषा और संवाद, पात्र : रंगमंचीय आयाम

नाटक में पात्र-परिकल्पना :

नायक-नायिका-विचार

क) भारतीय विचारधारा

नायक-परिकल्पना - नायक के भेद, प्रतिनायक, सहायक पात्र

नायिका परिकल्पना - नायिका भेद के आधारा, नायिका भेद,
प्रतिनायिका, सहनायिका, इती.

ख) पाश्चात्य विचारधारा

नायक, खलनायक, नायिका

पात्रों के वर्गीकरण के आधार : आधुनिक दृष्टि

पात्रों का वर्गीकरण

आधुनिक हिन्दी नाटकों में नारी-पात्र

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र

निष्कर्ष॥

द्वितीय अध्याय

विष्णु प्रभाकर : जीवनवृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

भूमिका

विष्णु प्रभाकर : जन्म तथा बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह,
प्रभाकर नाम का इतिहास

साहित्यिक प्रेरणा, प्रभाव

ग्रंथ संपदा : कहानी साहित्य, उपन्यास साहित्य,
जीवनी-संस्मरण साहित्य, वैचारिक साहित्य,
बाल साहित्य, अन्य विविध साहित्य

एकांकी साहित्य

नाटक साहित्य : (मौलिक)

नाटकों का वर्गीकरण :

अ) ऐतिहासिक-पौराणिक नाटक

1) नव-प्रभात 2) समाधि या गान्धार की भिक्षुणी

आ) सामाजिक नाटक

1) युगे युगे क्रांति, 2) टूटते परिवेश,
3) अब और नही, 4) श्वेत कमल

इ) राजनैतिक नाटक

1) कुहासा और किरण, 2) सत्ता के आर-पार,
3) केरल का क्रांतिकारी

ई) मनोवैज्ञानिक नाटक

1) डॉक्टर, 2) टगर, 3) बंदिनी,

उ) रूपांतरित नाटक

1) चंद्रहार, 2) होरी

मान-सम्मान

निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय : विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र

आदर्शवाद के परिप्रेक्ष्य में

भूमिका

साहित्य में आदर्शवाद

विष्णु प्रभाकर का नारी विषयक आदर्शवादी दृष्टिकोण

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के आदर्शवादी नारी-पात्र

अ) आदर्श पारिवारिक नारी-पात्र :

1) आदर्श माता : सुनंदा, यशस्वती-(सत्ता के आर-पार),
माँ (गांधार की भिक्षुणी), डॉ. अनीला (डॉक्टर),
माँ (श्वेतकमल), करूणा (टूटते परिवेश),
सरला (अब और नहीं)

2) आदर्श बेटी : बिंदु (श्वेत कमल), शुभ्रा (अब और नहीं)

3) आदर्श बहू : मंजरी (अब और नहीं), सावित्री (बंदिनी)

4) आदर्श बहन : ब्राह्मी, सुंदरी, (सत्ता के आर-पार),
भिक्षुणी (नव प्रभात), सुरेखा (युगे युगे क्रांति)

5) आदर्श प्रेमिका: आनंदी, मालवी (गांधार की भिक्षुणी)
अम्मुकुट्टी - (केरल का क्रांतिकारी),
जैनेट (युगे-युगे क्रांति), जरीना (टूटते परिवेश)

6) आदर्श पत्नी : महादेवी (सत्ता के आर-पार),
कारूवाकी (नव-प्रभात), उमा (बंदिनी),
करूणा (टूटते परिवेश), विमला (टगर),
गायत्री देवी (कुहासा और किरण),
रामकली (युगे युगे क्रांति)

आ) आदर्श देशप्रेमी नारी-पात्र :

आनंदी, मालवी, शहाजादी (गांधार की भिक्षुणी)
अम्मुकुट्टी, धाय माँ (केरल का क्रांतिकारी)
शारदा (युगे युगे क्रांति)

इ) आदर्श कलाकार नारी-पात्र

शांता, शुभ्रा, शुभ्रा नं. 2 (अब और नहीं),

रेवा, (नव प्रभात)

ई) आदर्श भिक्षुणी नारी-पात्र

कारूवाकी, संघमित्रा, रेवा, भिक्षुणी (नव-प्रभात)

निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय : विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र

यथार्थवाद के परिप्रेक्ष्य में

भूमिका

साहित्य में यथार्थवाद

विष्णु प्रभाकर का नारी विषयक यथार्थवादी दृष्टिकोण

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के यथार्थवादी नारी-पात्र

अ) व्यावसायिक नारी-पात्र

1) डॉक्टर : डॉ. अनीला, डॉ. मिसेज सईदा (डॉक्टर)

2) अफसर : राखी (श्वेतकमल)

3) कर्मचारी: सुनंदा (कुहासा और किरण), टगर (टगर),

उषा टंडन (श्वेत कमल)

4) साहित्यकार : प्रभा (कुहासा और किरण)

5) परिचारिका/सेविका : मिस लीला जासेफ, काकी (डॉक्टर)

6) मछुआरिन: अम्मुकुट्टी, मछुआरिन नं। और2 (केरल का क्रांतिकारी)

7) वेश्या : पूनम (श्वेतकमल)

आ) विद्रोही नारी-पात्र :

भारती (गांधार की भिक्षुणी), मनीषा (टूटते परिवेश),

शांता (अब और नहीं), सुनंदा (कुहासा और किरण)

इ) स्वच्छन्द नारी-पात्र :

टगर (टगर), दीप्ति (टूटते परिवेश), अन्विता (युगे युगे क्रांति)

ई) अत्याधुनिका नारी-पात्र

रीता (युगे युगे क्रांति), माधुरी (टगर)

उ) परित्यक्ता नारी-पात्र

डॉ. अनीला (डॉक्टर), टगर (टगर)

ऊ) अन्धविश्वासी नारी-पात्र

उमा, पूँटी, विश्वेश्वरी (बंदिनी)

ए) अन्य नारी पात्र

पद्मावती (अब और नहीं), इंदु (टूटते परिवेश),

कुँवारी माता - आनंदी (गांधार की भिक्षुणी), प्रतिमा (श्वेत कमल),

अमिा (बंदिनी)

पंचम अध्याय : **विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र**

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में

भूमिका

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नारी-पात्र

प्रधान मनोवैज्ञानिक नारी-पात्र

1) डॉ. अनीला (डॉक्टर), 2) टगर (टगर), 3) उमा (बंदिनी),

4) शांता (अब और नहीं), 5) करूणा (टूटते परिवेश),

6) आनंदी (गांधार की भिक्षुणी), 7) बिंदु (श्वेतकमल)

गौण मनोवैज्ञानिक नारी-पात्र

विद्रोह और प्रेम

1) मनीषा (टूटते परिवेश), 2) शारदा 3) जैनेट

4) अन्विता (युगे युगे क्रांति)

विद्रोह और साहस

5) सुरेखा (युगे युगे क्रान्ति)

प्रतिशोध

6) भिक्षुणी (नवप्रभात) 7) मालवी (गांधार की भिक्षुणी)

कुण्ठा

8) नीलिमा (श्वेतकमल), 9) रामकली (युगे युगे क्रांति)

द्विधा मन

10) महादेवी (सत्ता के आर पार)

शंका और ईर्ष्या

11) विमला (टगर)

मनमौज

12) रीता (युगे युगे क्रांति)

यौनाचार

13) पूनम (श्वेत कमल)

पागलपन

14) नीरू (डॉक्टर) 15) सावित्री (बन्दिनी)

16) अम्मुकुट्टी (केरल का क्रांतिकारी), 17) मालती (कुहासा और किरण)

प्रेतात्मा

18) रंजना का प्रेत (श्वेत कमल)

निष्कर्ष।

षष्ठ अध्याय : विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र

रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य में

भूमिका

अ) मंच-सज्जा

आ) पात्रों का क्रिया-व्यापार-अभिनेयता

इ) संवाद और भाषाशैली

अन्य शैलियाँ

ई) ध्वनि-प्रकाश-योजना

निष्कर्ष।

सप्तम अध्याय : समापन